क्या मुझे माफ़ी मिलेगी?

दाऊद का गुनाह

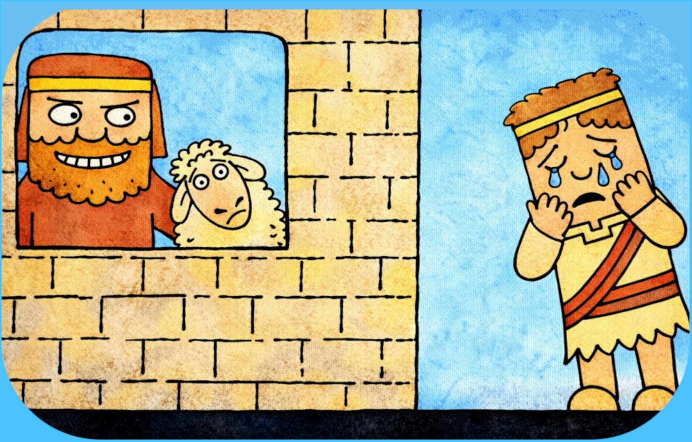

kyā mujhe muāfī milegī? dāūd kā gunāh

Will I Be Forgiven? David Sins

by Bakhtullah

[*Zinda Kalam 14*]

(Urdu—Hindi script)

© 2026 Chashma Media.
published and printed by
GWCS, New Delhi

Bible text is from UGV.

illus. R. Gunther (partly coloured by OpenAI)
https://www.lambsongs.co.nz/Bible%20Story%20Books/David%20And%20Nathan%20Big%20Book%20col.pdf

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

अपना गुनाह मत छुपाओ 5

माफ़ी माँगो 9

तब बहाल हो जाओगे 12

फिर भी गुनाह के नतीजे रहेंगे 12

मेरे हुज़ूर रहो 14

2 समुएल 11:1–12:23 15

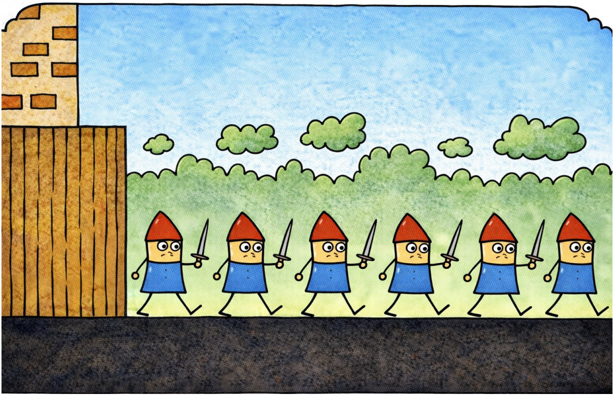

ख़ुदा ने वादा किया था कि दाऊद, बादशाह बनेगा। और ऐसा ही हुआ। दाऊद बादशाह बन गया। साल गुज़रते गए। तब लिखा है,

> बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। दाऊद बादशाह ने भी अपने फ़ौजियों को लड़ने के लिए भेज दिया। योआब की राहनुमाई में उसके अफ़सर और पूरी फ़ौज अम्मोनियों से लड़ने के लिए रवाना हुए। वह दुश्मन को तबाह करके दारुल-हुकूमत रब्बा का मुहासरा करने लगे। दाऊद ख़ुद यरूशलम में रहा।

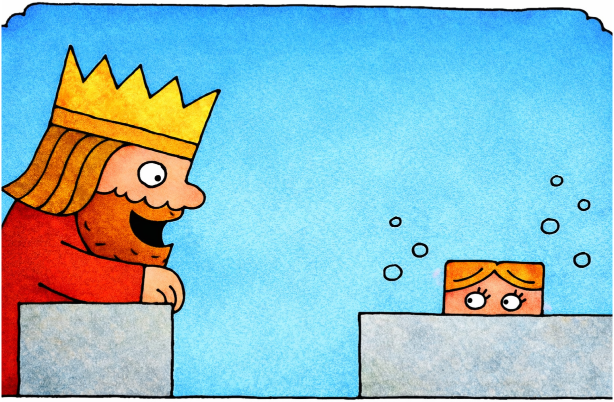

एक दिन वह दोपहर के वक़्त सो गया। जब शाम के वक़्त जाग उठा तो महल की छत पर टहलने लगा। अचानक उसकी नज़र एक औरत पर पड़ी जो अपने सहन में नहा रही थी। औरत निहायत ख़ूबसूरत थी। दाऊद ने किसी को उसके बारे में मालूमात हासिल करने के लिए भेज दिया। वापस आकर उसने इत्तला दी, “औरत का नाम बत-सबा है। वह इलियाम की बेटी और ऊरियाह हित्ती की बीवी है।”

तब दाऊद ने क़ासिदों को बत-सबा के पास भेजा ताकि उसे महल में ले आएँ। औरत आई तो दाऊद उससे

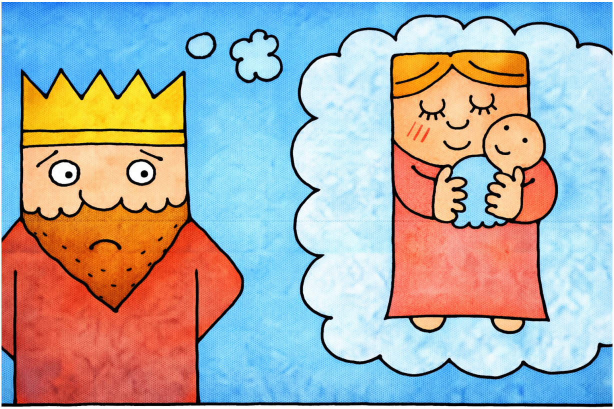

हमबिसतर हुआ। फिर बत-सबा अपने घर वापस चली गई। [...]

कुछ देर के बाद उसे मालूम हुआ कि मेरा पाँव भारी हो गया है। उसने दाऊद को इत्तला दी, “मेरा पाँव भारी हो गया है।” [...]

[तब] दाऊद ने योआब को ख़त लिखकर भेज दिया। उसमें लिखा था, “ऊरियाह को सबसे अगली सफ़ में खड़ा करें, जहाँ लड़ाई सबसे सख़्त होती है। फिर अचानक पीछे की तरफ़ हटकर उसे छोड़ दें ताकि दुश्मन उसे मार दे।”

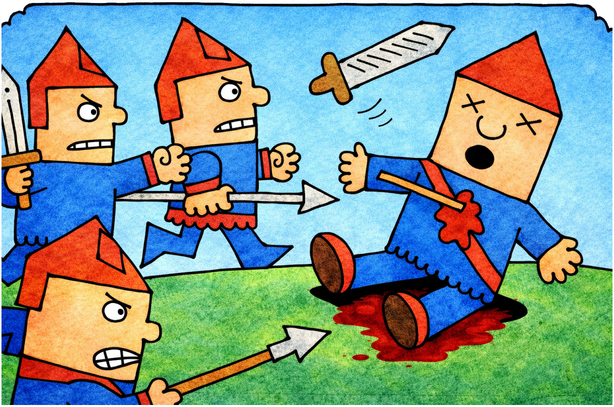

यह पढ़कर योआब ने ऊरियाह को एक ऐसी जगह पर खड़ा किया जिसके बारे में उसे इल्म था कि दुश्मन के सबसे ज़बरदस्त फ़ौजी वहाँ लड़ते हैं। जब अम्मोनियों ने शहर से निकलकर उन पर हमला किया तो कुछ इसराईली शहीद हुए। ऊरियाह हित्ती भी उनमें शामिल था।

जब बत-सबा को इत्तला मिली कि ऊरियाह नहीं रहा तो उसने उसका मातम किया। मातम का वक़्त पूरा हुआ तो दाऊद ने उसे अपने घर बुलाकर उससे शादी कर ली। फिर उसके बेटा पैदा हुआ।

लेकिन दाऊद की यह हरकत रब को निहायत बुरी लगी।

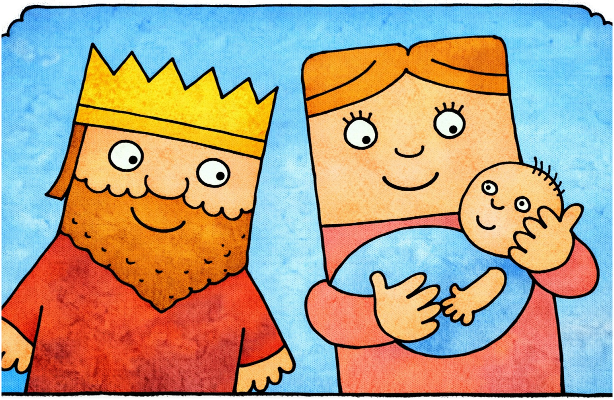

► **कलाम हमें हज़रत दाऊद का यह संगीन गुनाह क्यों सुनाता है?**
इससे वह हमें 5 सबक़ सिखाना चाहता है। पहला सबक़,

अपना गुनाह मत छुपाओ

► **दाऊद ने अपना गुनाह छुपाया। लेकिन क्या यह ख़ुदा से छुपा रहा?**
नहीं। उससे कोई भी चीज़ छुपी नहीं रहती।

► **क्या दाऊद, बादशाह होने के बाइस ख़ुदा की नज़र में मुलज़िम न ठहरा?**
बिलकुल नहीं। इनसान बड़ा हो या छोटा, गुनाह करने से वह मुलज़िम ठहरता है। इसलिए लिखा है,

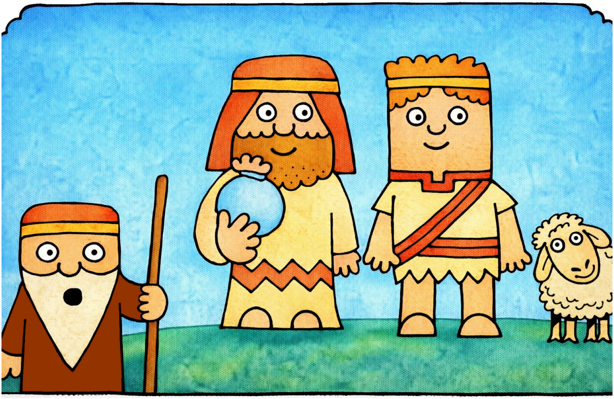

रब ने नातन नबी को दाऊद के पास भेज दिया। बादशाह के पास पहुँचकर वह कहने लगा, “किसी शहर में दो आदमी रहते थे। एक अमीर था, दूसरा ग़रीब। अमीर की बहुत भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, लेकिन ग़रीब के पास कुछ नहीं था, सिर्फ़ भेड़ की नन्ही-सी बच्ची जो उसने ख़रीद रखी थी। ग़रीब उसकी परवरिश करता रहा, और वह घर में उसके बच्चों के साथ साथ बड़ी होती गई। वह उसकी प्लेट से खाती, उसके प्याले से पीती और रात को उसके बाज़ुओं में सो जाती। ग़रज़ भेड़ ग़रीब के लिए बेटी की-सी हैसियत रखती थी।

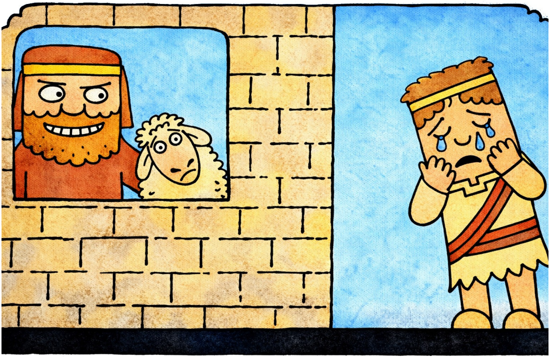

एक दिन अमीर के हाँ मेहमान आया। जब उसके लिए खाना पकाना था तो अमीर का दिल नहीं करता था कि अपने रेवड़ में से किसी जानवर को ज़बह करे, इसलिए उसने ग़रीब आदमी से उसकी नन्ही-सी भेड़ लेकर उसे मेहमान के लिए तैयार किया।”

यह सुनकर दाऊद को बड़ा ग़ुस्सा आया। वह पुकारा, “रब की हयात की क़सम, जिस आदमी ने यह किया वह सज़ाए-मौत के लायक़ है। लाज़िम है कि वह भेड़ की बच्ची के एवज़ ग़रीब को भेड़ के चार बच्चे दे। यही उसकी मुनासिब सज़ा है, क्योंकि उसने ऐसी हरकत करके ग़रीब पर तरस न खाया।”

> नातन ने दाऊद से कहा, “आप ही वह आदमी हैं! रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैंने तुझे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया, और मैं ही ने तुझे साऊल से महफ़ूज़ रखा। साऊल का घराना उसकी बीवियों समेत मैंने तुझे दे दिया। हाँ, पूरा इसराईल और यहूदाह भी तेरे तहत आ गए हैं। और अगर यह तेरे लिए कम होता तो मैं तुझे मज़ीद देने के लिए भी तैयार होता। अब मुझे बता कि तूने मेरी मरज़ी को हक़ीर जानकर ऐसी हरकत क्यों की है जिससे मुझे नफ़रत है? तूने ऊरियाह हित्ती को क़त्ल करवा के उसकी बीवी को छीन लिया है। हाँ, तू क़ातिल है, क्योंकि तूने हुक्म दिया कि ऊरियाह को अम्मोनियों से लड़ते लड़ते मरवाना है। चूँकि तूने मुझे हक़ीर जानकर ऊरियाह हित्ती की बीवी को उससे छीन लिया इसलिए आइंदा तलवार तेरे घराने से नहीं हटेगी।’ रब फ़रमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तेरे अपने ख़ानदान में से मुसीबत तुझ पर आएगी। तेरे देखते देखते मैं तेरी बीवियों को तुझसे छीनकर तेरे क़रीब के आदमी के हवाले कर दूँगा, और वह अलानिया उनसे हमबिसतर होगा। तूने चुपके से गुनाह किया, लेकिन जो कुछ मैं जवाब में होने दूँगा वह अलानिया और पूरे इसराईल के देखते देखते होगा।’”

नबी की बात से ख़ुदा हमें दूसरा सबक़ सिखाता है, यह कि

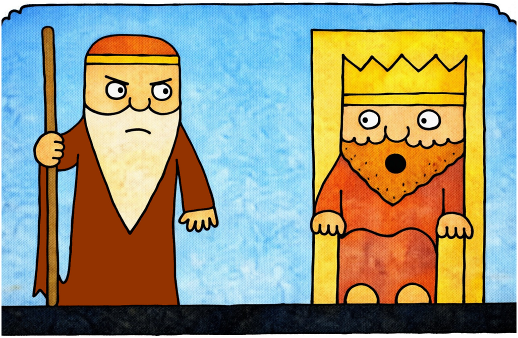

माफ़ी माँगो

► **दाऊद के संगीन जुर्म के जवाब में ख़ुदा ने क्या किया?**

उसने नातन नबी को उसके पास भेज दिया।

► **नातन को भेजने का क्या मक़सद था?**

मक़सद यह था कि दाऊद मानकर तौबा करे।

► **वह क्यों चाहता था कि दाऊद बादशाह तौबा करे?**

गुनाह से दाऊद का ख़ुदा के साथ ताल्लुक़ बिगड़ गया था।

► **वह क्यों बिगड़ गया?**

वह इसलिए बिगड़ गया कि ख़ुदा पाक और मुक़द्दस है। उसमें ऐब नहीं है। इसलिए जब हमसे गुनाह सरज़द होते हैं तो हमारा उसके साथ ताल्लुक़ बिगड़ जाता है।

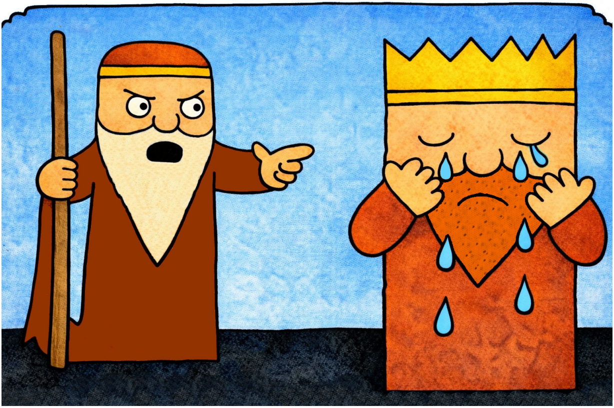

► **क्या ख़ुदा उसे एकदम सज़ा नहीं दे सकता था? उसे मनवाने की क्या ज़रूरत थी?**

ख़ुदा इनसाफ़ करनेवाला तो है लेकिन वह रहमदिल भी है। इसलिए वह दाऊद को तौबा करने का मौक़ा फ़राहम करना चाहता था।

► **वह दाऊद को क्यों तौबा का मौक़ा देना चाहता था?**

वह हमेशा चाहता है कि इनसान का उसके साथ ताल्लुक़ बहाल हो जाए। और यह सिर्फ़ इस सूरत में हो सकता है कि वह तौबा करे। फिर लिखा है,

> तब दाऊद ने इक़रार किया, "मैंने रब का गुनाह किया है।" नातन ने जवाब दिया, "रब ने आपको माफ़

> कर दिया है और आप नहीं मरेंगे। लेकिन इस हरकत से आपने रब के दुश्मनों को कुफ़र बकने का मौक़ा फ़राहम किया है, इसलिए बत-सबा से होनेवाला बेटा मर जाएगा।”
>
> तब नातन अपने घर चला गया।
>
> फिर रब ने बत-सबा के बेटे को छू दिया, और वह सख़्त बीमार हो गया। दाऊद ने अल्लाह से इलतमास की कि बच्चे को बचने दे। रोज़ा रखकर वह रात के वक़्त नंगे फ़र्श पर सोने लगा। घर के बुज़ुर्ग उसके इर्दगिर्द खड़े कोशिश करते रहे कि वह फ़र्श से उठ जाए, लेकिन बेफ़ायदा। वह उनके साथ खाने के लिए भी तैयार नहीं था।
>
> सातवें दिन बेटा फ़ौत हो गया।

► **क्या नबी की बात सुनकर दाऊद ने तौबा की?**

जी हाँ।

► **उसने क्या कहा?**

वह बोला कि मैंने रब का गुनाह किया है।

► **उसने क्यों नहीं कहा कि मैंने ऊरियाह का गुनाह किया है?**

वह समझ गया कि मैंने न सिर्फ़ ऊरियाह का गुनाह किया है। मैंने ख़ुदा का ही गुनाह किया है।

► **जब हम किसी का गुनाह करते हैं तो क्या हमारा गुनाह उसी पर महदूद रहता है?**

नहीं। यह करने से हम ख़ुदा का ही गुनाह करते हैं, हम उसी से सरकशी करते हैं। गुनाह करने से हमारा ख़ुदा से ताल्लुक़ बिगड़ जाता है। लेकिन इस जगह पर ख़ुदा हमें एक ख़ुशख़बरी भी सुनाता है। यह कि

तब बहाल हो जाओगे

► **जब दाऊद ने तौबा की तो ख़ुदा ने जवाब में क्या किया?**

उसने दाऊद को माफ़ कर दिया। माफ़ी से दाऊद का ख़ुदा के साथ ताल्लुक़ बहाल हुआ।

यह एक राज़ है कि ख़ुदा जो इतना पाक और क़ुद्दूस है फिर भी हमें माफ़ करता है जब हम तौबा करते हैं। इस रहम की बिना पर उसने बार बार अपने नबियों को भेज दिया ताकि वह इनसान को राहे-मुस्तक़ीम पर वापस लाएँ। इसी रहम की बिना पर उसने ईसा मसीह को क़ुरबान किया ताकि वह सज़ा बरदाश्त करे जो हमें अपने गुनाहों की वजह से उठानी थी।

ख़ुदा हमें एक चौथा सबक़ भी सिखाना चाहता है, यह कि

फिर भी गुनाह के नतीजे रहेंगे

► **क्या माफ़ी मिलने का मतलब यह था कि दाऊद को सज़ा नहीं मिलेगी?**

माफ़ी मिलने से दाऊद मरने से बच तो जाएगा। लेकिन उसका बेटा मर जाएगा, और बाद में एक बेटा उसे सख़्त दुख पहुँचाएगा। जो दाऊद ने चुपके से किया था वह उसका बेटा खुले-आम करेगा। माफ़ी मिलने के बावुजूद दाऊद को अपने गुनाह के नतीजे भुगतने पड़ेंगे। जब ख़ुदा हमें माफ़ करता है तो फिर भी हमें अपने गुनाहों के नतीजे भुगतने पड़ते हैं। इसमें भी ख़ुदा एक रहमदिल बाप है जो हमेशा चाहता है कि उसके प्यारे बच्चे सही राह पर रहें।

अब ध्यान दें कि क्या हुआ। जब दाऊद को इत्तला मिली कि बेटा मर गया है तो लिखा है,

> दाऊद के मुलाज़िमों ने उसे ख़बर पहुँचाने की जुर्रत न की, क्योंकि उन्होंने सोचा, "जब बच्चा अभी ज़िंदा था तो हमने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन उसने हमारी एक भी न सुनी। अब अगर बच्चे की मौत की ख़बर दें तो ख़तरा है कि वह कोई नुक़सानदेह क़दम उठाए।"
> लेकिन दाऊद ने देखा कि मुलाज़िम धीमी आवाज़ में एक दूसरे से बात कर रहे हैं। उसने पूछा, "क्या बेटा मर गया है?" उन्होंने जवाब दिया, "जी, वह मर गया है।"
> यह सुनकर दाऊद फ़र्श पर से उठ गया। वह नहाया और जिस्म को ख़ुशबूदार तेल से मलकर साफ़ कपड़े पहन लिए। फिर उसने रब के घर में जाकर उसकी परस्तिश की। इसके बाद वह महल में वापस गया और खाना मँगवाकर खाया।

इससे ख़ुदा हमें एक आख़िरी सबक़ सिखाता है, यह कि

मेरे हुज़ूर रहो

► **जब बेटा बीमार पड़ गया तो दाऊद ने क्या किया?**

वह रोज़ा रखकर रात के वक़्त नंगे फ़र्श पर सोने लगा।

► **फिर भी जब बेटा मर गया तो दाऊद का जवाब थोड़ा अजीब था। वह क्या?**

वह फ़र्श पर से उठकर नहाया। फिर उस ने जिस्म को तेल से मलकर साफ़ कपड़े पहन लिए और रब के घर में जाकर परस्तिश की।

► **क्या दाऊद ख़ुदा की सज़ा से ख़ुदा के हुज़ूर से दूर हुआ?**

नहीं। दाऊद का पहला क़दम यह था कि रब के घर में जाकर परस्तिश करे। वह जानता था कि जो भी हो, ख़ुदा के हुज़ूर रहना मेरी ज़िंदगी का मक़सद और मनज़िल है। इससे दाऊद की अज़मत साफ़ नज़र आती है। कामयाब होते वक़्त ख़ुदा की परस्तिश करना आसान है। लेकिन जो अपने संगीन गुनाह के बाइस खुले तौर से सज़ा मिले और फिर भी ख़ुदा की परस्तिश करे वह सही राह पर है।

► **वह क्यों सही राह पर है?**

वह समझ गया है कि ख़ुदा पुलिस अफ़सर नहीं है जो मुझे हर मौक़े पर डंडा मारे। नहीं, ख़ुदा रहमदिल है और मुझसे मुहब्बत रखता है। वह हर वक़्त मेरी बहाली के लिए तड़पता है। सज़ा भी उसकी नफ़रत का इज़हार नहीं है बल्कि उसकी मुहब्बत का। सज़ा से वह

मुझे भगाना नहीं चाहता बल्कि मुझे तौबा, माफ़ी और बहाली तक पहुँचाना चाहता है। वह चाहता है कि मैं तौबा करके वापस लौटूँ, कि मेरा उसके साथ ताल्लुक़ दुबारा बहाल हो जाए। इसलिए जो भी हो मैं उसके हुज़ूर रहने के लिए तड़पता रहूँगा।

► **क्या आपको भी ख़ुदा की मुहब्बत का तजरबा हुआ है? क्या आप उसके हुज़ूर रहने के लिए तड़पते हैं?**

यों ख़ुदा हमें हज़रत दाऊद के गुनाह की मिसाल से 5 अहम सबक़ सिखाता है :

- **अपना गुनाह मत छुपाओ।**
- **माफ़ी माँगो।**
- **तब बहाल हो जाओगे।**
- **फिर भी गुनाह के नतीजे रहेंगे।**
- **मेरे हुज़ूर रहो।**

2 समुएल 11:1–12:23

बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। दाऊद बादशाह ने भी अपने फ़ौजियों को लड़ने के लिए भेज दिया। योआब की राहनुमाई में उसके अफ़सर और पूरी फ़ौज अम्मोनियों से लड़ने के लिए रवाना हुए। वह दुश्मन को तबाह

करके दारुल-हुकूमत रब्बा का मुहासरा करने लगे। दाऊद ख़ुद यरूशलम में रहा।

एक दिन वह दोपहर के वक़्त सो गया। जब शाम के वक़्त जाग उठा तो महल की छत पर टहलने लगा। अचानक उसकी नज़र एक औरत पर पड़ी जो अपने सहन में नहा रही थी। औरत निहायत ख़ूबसूरत थी। दाऊद ने किसी को उसके बारे में मालूमात हासिल करने के लिए भेज दिया। वापस आकर उसने इत्तला दी, “औरत का नाम बत-सबा है। वह इलियाम की बेटी और ऊरियाह हित्ती की बीवी है।” तब दाऊद ने क़ासिदों को बत-सबा के पास भेजा ताकि उसे महल में ले आएँ। औरत आई तो दाऊद उससे हमबिसतर हुआ। फिर बत-सबा अपने घर वापस चली गई। [...]

कुछ देर के बाद उसे मालूम हुआ कि मेरा पाँव भारी हो गया है। उसने दाऊद को इत्तला दी, “मेरा पाँव भारी हो गया है।” [...]

[तब] दाऊद ने योआब को ख़त लिखकर ऊरियाह के हाथ भेज दिया। उसमें लिखा था, “ऊरियाह को सबसे अगली सफ़ में खड़ा करें, जहाँ लड़ाई सबसे सख़्त होती है। फिर अचानक पीछे की तरफ़ हटकर उसे छोड़ दें ताकि दुश्मन उसे मार दे।”

यह पढ़कर योआब ने ऊरियाह को एक ऐसी जगह पर खड़ा किया जिसके बारे में उसे इल्म था कि दुश्मन के सबसे ज़बरदस्त फ़ौजी वहाँ लड़ते हैं। जब अम्मोनियों ने शहर से निकलकर उन पर हमला

किया तो कुछ इसराईली शहीद हुए। ऊरियाह हित्ती भी उनमें शामिल था।

योआब ने लड़ाई की पूरी रिपोर्ट भेज दी। दाऊद को यह पैग़ाम पहुँचानेवाले को उसने बताया, “जब आप बादशाह को तफ़सील से लड़ाई का सारा सिलसिला सुनाएँगे तो हो सकता है वह ग़ुस्से होकर कहे, ‘आप शहर के इतने क़रीब क्यों गए? क्या आपको मालूम न था कि दुश्मन फ़सील से तीर चलाएँगे? क्या आपको याद नहीं कि क़दीम ज़माने में जिदाऊन के बेटे अबीमलिक के साथ क्या हुआ? तैबिज़ शहर में एक औरत ही ने उसे मार डाला। और वजह यह थी कि वह क़िले के इतने क़रीब आ गया था कि औरत दीवार पर से चक्की का ऊपर का पाट उस पर फेंक सकी। शहर की फ़सील के इस क़दर क़रीब लड़ने की क्या ज़रूरत थी?’ अगर बादशाह आप पर ऐसे इलज़ामात लगाएँ तो जवाब में बस इतना ही कह देना, ‘ऊरियाह हित्ती भी मारा गया है।’”

क़ासिद रवाना हुआ। जब यरूशलम पहुँचा तो उसने दाऊद को योआब का पूरा पैग़ाम सुना दिया, “दुश्मन हमसे ज़्यादा ताक़तवर थे। वह शहर से निकलकर खुले मैदान में हम पर टूट पड़े। लेकिन हमने उनका सामना यों किया कि वह पीछे हट गए, बल्कि हमने उनका ताक़्क़ुब शहर के दरवाज़े तक किया। लेकिन अफ़सोस कि फिर कुछ तीरंदाज़ हम पर फ़सील पर से तीर बरसाने लगे।

आपके कुछ ख़ादिम खेत आए और ऊरियाह हित्ती भी उनमें शामिल है।” दाऊद ने जवाब दिया, “योआब को बता देना कि यह मामला आपको हिम्मत हारने न दे। जंग तो ऐसी ही होती है। कभी कोई यहाँ तलवार का लुक़मा हो जाता है, कभी वहाँ। पूरे अज़म के साथ शहर से जंग जारी रखकर उसे तबाह कर दें। यह कहकर योआब की हौसलाअफ़्ज़ाई करें।”

जब बत-सबा को इत्तला मिली कि ऊरियाह नहीं रहा तो उसने उसका मातम किया। मातम का वक़्त पूरा हुआ तो दाऊद ने उसे अपने घर बुलाकर उससे शादी कर ली। फिर उसके बेटा पैदा हुआ। लेकिन दाऊद की यह हरकत रब को निहायत बुरी लगी।

रब ने नातन नबी को दाऊद के पास भेज दिया। बादशाह के पास पहुँचकर वह कहने लगा, “किसी शहर में दो आदमी रहते थे। एक अमीर था, दूसरा ग़रीब। अमीर की बहुत भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, लेकिन ग़रीब के पास कुछ नहीं था, सिर्फ़ भेड़ की नन्ही-सी बच्ची जो उसने ख़रीद रखी थी। ग़रीब उसकी परवरिश करता रहा, और वह घर में उसके बच्चों के साथ साथ बड़ी होती गई। वह उसकी प्लेट से खाती, उसके प्याले से पीती और रात को उसके बाज़ुओं में सो जाती। ग़रज़ भेड़ ग़रीब के लिए बेटी की-सी हैसियत रखती थी। एक दिन अमीर के हाँ मेहमान आया। जब उसके लिए खाना पकाना था तो अमीर का दिल नहीं करता था कि अपने रेवड़

में से किसी जानवर को ज़बह करे, इसलिए उसने ग़रीब आदमी से उसकी नन्ही-सी भेड़ लेकर उसे मेहमान के लिए तैयार किया।”

यह सुनकर दाऊद को बड़ा ग़ुस्सा आया। वह पुकारा, “रब की हयात की क़सम, जिस आदमी ने यह किया वह सज़ाए-मौत के लायक़ है। लाज़िम है कि वह भेड़ की बच्ची के एवज़ ग़रीब को भेड़ के चार बच्चे दे। यही उसकी मुनासिब सज़ा है, क्योंकि उसने ऐसी हरकत करके ग़रीब पर तरस न खाया।”

नातन ने दाऊद से कहा, “आप ही वह आदमी हैं! रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मैंने तुझे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया, और मैं ही ने तुझे साऊल से महफ़ूज़ रखा। साऊल का घराना उसकी बीवियों समेत मैंने तुझे दे दिया। हाँ, पूरा इसराईल और यहूदाह भी तेरे तहत आ गए हैं। और अगर यह तेरे लिए कम होता तो मैं तुझे मज़ीद देने के लिए भी तैयार होता। अब मुझे बता कि तूने मेरी मरज़ी को हक़ीर जानकर ऐसी हरकत क्यों की है जिससे मुझे नफ़रत है? तूने ऊरियाह हित्ती को क़त्ल करवा के उसकी बीवी को छीन लिया है। हाँ, तू क़ातिल है, क्योंकि तूने हुक्म दिया कि ऊरियाह को अम्मोनियों से लड़ते लड़ते मरवाना है। चूँकि तूने मुझे हक़ीर जानकर ऊरियाह हित्ती की बीवी को उससे छीन लिया इसलिए आइंदा तलवार तेरे घराने से नहीं हटेगी।’

रब फ़रमाता है, 'मैं होने दूँगा कि तेरे अपने ख़ानदान में से मुसीबत तुझ पर आएगी। तेरे देखते देखते मैं तेरी बीवियों को तुझसे छीनकर तेरे क़रीब के आदमी के हवाले कर दूँगा, और वह अलानिया उनसे हमबिसतर होगा। तूने चुपके से गुनाह किया, लेकिन जो कुछ मैं जवाब में होने दूँगा वह अलानिया और पूरे इसराईल के देखते देखते होगा।'"

तब दाऊद ने इक़रार किया, "मैंने रब का गुनाह किया है।" नातन ने जवाब दिया, "रब ने आपको माफ़ कर दिया है और आप नहीं मरेंगे। लेकिन इस हरकत से आपने रब के दुश्मनों को कुफ़र बकने का मौक़ा फ़राहम किया है, इसलिए बत-सबा से होनेवाला बेटा मर जाएगा।"

तब नातन अपने घर चला गया।

फिर रब ने बत-सबा के बेटे को छू दिया, और वह सख़्त बीमार हो गया। दाऊद ने अल्लाह से इलतमास की कि बच्चे को बचने दे। रोज़ा रखकर वह रात के वक़्त नंगे फ़र्श पर सोने लगा। घर के बुज़ुर्ग उसके इर्दगिर्द खड़े कोशिश करते रहे कि वह फ़र्श से उठ जाए, लेकिन बेफ़ायदा। वह उनके साथ खाने के लिए भी तैयार नहीं था।

सातवें दिन बेटा फ़ौत हो गया। दाऊद के मुलाज़िमों ने उसे ख़बर पहुँचाने की जुर्रत न की, क्योंकि उन्होंने सोचा, "जब बच्चा अभी

ज़िंदा था तो हमने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन उसने हमारी एक भी न सुनी। अब अगर बच्चे की मौत की ख़बर दें तो ख़तरा है कि वह कोई नुक़सानदेह क़दम उठाए।”

लेकिन दाऊद ने देखा कि मुलाज़िम धीमी आवाज़ में एक दूसरे से बात कर रहे हैं। उसने पूछा, “क्या बेटा मर गया है?” उन्होंने जवाब दिया, “जी, वह मर गया है।”

यह सुनकर दाऊद फ़र्श पर से उठ गया। वह नहाया और जिस्म को ख़ुशबूदार तेल से मलकर साफ़ कपड़े पहन लिए। फिर उसने रब के घर में जाकर उसकी परस्तिश की। इसके बाद वह महल में वापस गया और खाना मँगवाकर खाया।

उसके मुलाज़िम हैरान हुए और बोले, “जब बच्चा ज़िंदा था तो आप रोज़ा रखकर रोते रहे। अब बच्चा जान बहक़ हो गया है तो आप उठकर दुबारा खाना खा रहे हैं। क्या वजह है?” दाऊद ने जवाब दिया, “जब तक बच्चा ज़िंदा था तो मैं रोज़ा रखकर रोता रहा। ख़याल यह था कि शायद रब मुझ पर रहम करके उसे ज़िंदा छोड़ दे। लेकिन जब वह कूच कर गया है तो अब रोज़ा रखने का किया फ़ायदा? क्या मैं इससे उसे वापस ला सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! एक दिन मैं ख़ुद ही उसके पास पहुँचूँगा। लेकिन उसका यहाँ मेरे पास वापस आना नामुमकिन है।”